© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 07 | October- December 2017

बौद्ध धर्म एवं बौद्ध धर्म से जुड़े 8 पवित्र चिन्ह : एक विवेचना

VINOD KUMAR, Reserch Scholar, Department of A.I.H, Culture & Archeology
Kurukshetra University , Kurukshetra

सार :

बौद्ध धर्म भारत की श्रमण परम्परा से निकला धर्म और दर्शन है. इसके प्रस्थापक महात्मा बुद्ध शाक्यमुनि (गौतम बुद्ध) थे. वे 563 ईसा पूर्व से 483 ईसा पूर्व तक रहे. ईसाई और इस्लाम धर्म से पहले बौद्ध धर्म की उत्पत्ति हुई थी. दोनों धर्म के बाद यह दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा धर्म है. इस धर्म को मानने वाले ज्यादातर चीन, जापान, कोरिया, थाईलैंड, कंबोडिया, श्रीलंका, नेपाल, भूटान और भारत जैसे कई देशों में रहते हैं . इसा पूर्व 6 वी शताब्धी में गौतम बुद्ध द्वारा बौद्ध धर्म की स्थापना हुई है। बुद्ध का जन्म 563 ईसा पूर्व में लुंबिनी, नेपाल और महापरिनिर्वाण 483 ईसा पूर्व कुशीनगर, भारत में हुआ था। उनके महापरिनिर्वाण के अगले पाँच शताब्दियों में, बौद्ध धर्म पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में फैला और अगले दो हजार वर्षों में मध्य, पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी जम्बू महाद्वीप में भी फैल गया।

ISSN 2454-308X
9 770024 543081

मुख्य शब्द : बौध धर्म, हीनयान , महायान, पवित्र चिन्ह .

बौद्ध धर्म में चार प्रमुख सम्प्रदाय हैं: हीनयान, थेरवाद, महायान, वज्रयान और नवयान, परन्तु बौद्ध धर्म एक ही है एवं सभी बौद्ध सम्प्रदाय बुद्ध के सिद्धान्त ही मानते है। ईसाई धर्म के बाद बौद्ध धर्म दुनिया का दुसरा सबसे बड़ा धर्म हैं, दुनिया के करीब २ अरब (२९%) लोग बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। किंतु, अमेरिका के प्यु रिसर्च के अनुसार, विश्व में लगभग ५४ करोड़ लोग बौद्ध धर्म के अनुयायी है, जो दुनिया की आबादी का 7% हिस्सा है। प्यु रिसर्च ने चीन, जापान व वियतनाम देशों के बौद्धों की संख्या बहुत ही कम बताई हैं, हालांकि यह देश सर्वाधिक बौद्ध आबादी वाले शीर्ष के तीन देश हैं। दुनिया के 200 से अधिक देशों में बौद्ध अनुयायी हैं। किंतु चीन, जापान, वियतनाम, थाईलैण्ड, म्यान्मार, भूटान, श्रीलंका, कम्बोडिया, मंगोलिया, तिब्बत, लाओस, हांगकांग, ताइवान, मकाउ, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया एवं उत्तर कोरिया समेत कुल 18 देशों में बौद्ध धर्म 'प्रमुख धर्म' धर्म है। भारत, नेपाल, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, रूस, ब्रुनेई, मलेशिया आदि देशों में भी लाखों और करोडों बौद्ध अनुयायी हैं।

भगवान बुद्ध के अनुसार धम्म जीवन की पवित्रता बनाए रखना और पूर्णता प्राप्त करना है। साथ ही निर्वाण प्राप्त करना और तृष्णा का त्याग करना है। इसके अलावा भगवान बुद्ध ने सभी संस्कार को अनित्य बताया है। भगवान बुद्ध ने मानव के कर्म को नैतिक संस्थान का आधार बताया है। यानी भगवान बुद्ध के अनुसार धम्म यानी धर्म वही है। जो सबके लिए ज्ञान के द्वार खोल दे। और उन्होने ये भी बताया कि केवल विद्वान होना ही पर्याप्त नहीं है। विद्वान वही है

जो अपने की ज्ञान की रोशनी से सबको रोशन करे। धर्म को लोगों की जिंदगी से जोड़ते हुए भगवान बुद्ध ने बताया कि करूणा शील और मैत्री अनिवार्य है। इसके अलावा सामाजिक भेद भाव मिटाने के लिए भी भगवान बुद्ध ने प्रयास करते हुए बताया था कि लोगों का मुल्यांकन जन्म के आधार पर नहीं कर्म के आधार पर होना चाहिए। भगवान बुद्ध के बताए मार्ग पर दुनिया भर के करोड़ों लोग चलते है। जिससे वो सही राह पर चलकर अपने जीवन को सार्थक बनाते हैं।तथागत गौतम बुद्ध अपने आपको भगवान या ईश्वर नहीं बताते है।

बौद्ध धर्म के संस्थापक, सिदार्थ गौतम का जन्म भारत में लगभग 600 ईसा पूर्व एक राजकीय परिवार में हुआ था। जैसा कि कहानी बताती है, वह बहुत ही अधिक विलासी जीवन में रहते हुए, बाहरी संसार से बिल्कुल ही कम सम्पर्क में था। उसके अभिभावकों ने उसे धर्म के प्रभाव से और हर तरह के दर्द और पीड़ा से बचाने की चाहत रखी थी। परन्तु अधिक समय नहीं बीता था, जब उसके बाहर जाने का अवसर मिल गया, और उसने एक बुजुर्ग व्यक्ति, एक बीमार व्यक्ति, और एक अर्थी के दर्शनों को प्राप्त किया। उसका चौथा दर्शन एक शान्त मुद्रा वाले सन्यासी (विलासता और आराम से भरे जीवन का त्याग करने वाला) का था। सन्यासी की शान्ति को देखने के पश्चात्, उसने स्वयं सन्यासी हो जाने का संकल्प लिया। उसने वैराग्य के द्वारा आत्मज्ञान की खोज की प्राप्ति करने के लिए अपने जीवन के सार सुखों और खुशहाली का त्याग कर दिया। वह स्व-वैराग्य और गहन ध्यान के कार्यों में कुशल था। वह उसके साथियों में अगुवा था। अन्त में, उसके प्रयास एक अन्तिम संकेत में समाप्त हुए। उसने स्वयं को चावल के एक कटोरा के साथ "सन्तुष्टि" दी और फिर एक अंजीर के एक पेड़ (जिसे बोधि वृक्ष कहा जाता है) के नीचे ध्यान करने के लिए तब तक बैठ गया जब तक वह या तो "आत्मज्ञान" तक पहुँचे या फिर मर जाए। दुखों और परीक्षाओं के पश्चात् भी, अगली भोर को, उसने आत्मज्ञान को प्राप्त ही कर लिया। इस प्रकार, वह "एक आत्मज्ञान" पाया हुआ या एक 'बुद्धा' के रूप में जाना गया। उसने अपने इस नई आत्मजागृति को लिया और अपने साथी सन्यासियों को शिक्षा देने लगा, जिनमें उसने पहले से ही बहुत अधिक प्रभाव को प्राप्त कर लिया था। उसके साथियों में पाँच उसके प्रथम शिष्य बन गए।

बौद्ध धर्म से जुड़े 8 पवित्र चिन्ह

भगवान बुद्ध बौद्ध धर्म के प्रवर्तक हैं। भारत समेत दुनिया के कई हिस्सों में इस धर्म को मानने वालों की संख्या करोड़ो में है। बौद्ध धर्म के सभी सिद्धांतों जिनका उपदेश भगवान बुद्ध ने दिया था प्रतीको के रूप में वर्णन किया गया है। बौद्ध धर्म के आठ शुभ चिह्न पूजनीय हैं जो कि कुछ इस तरह हैं।

श्वेत शंख: श्वेत शंख धर्म की मधुर और संगीतमय शिक्षा को दर्शाता है। यह हर प्रकार के व्यवहार वाले शिष्यों के लिए उपयुक्त है। यह शंख उनको अज्ञानता से उठाकर अच्छे कर्म और दूसरों की भलाई करने की प्रेरणा देता है।

विजयी ध्वज: जीवन में शारीरिक, मानसिक और अन्य गतिरोधों के विरुद्ध पाई गई विजय का प्रतीक है। यह बौद्ध धर्म के सिद्धांतों की विजय का भी प्रतीक है।

स्वर्ण मछली: स्वर्ण मछली सभी जीवों के निर्भय जीवन जीने का प्रतीक है। जैसे मछली निश्चिंत होकर तैरती है, वैसे ही सभी जीवों को निर्भय होकर जीना चाहिए।

पवित्र छत्री: पवित्र छत्री मनुष्यों को बीमारी, विपत्ति और सभी विनाशी ताकतों से सुरक्षित रखने की प्रतीक है। यह तेज धूप से छाया का आनन्द लेने का भी प्रतीक है।

धर्मचक्र: यह बौद्ध धर्म के सभी प्रकार के सिद्धांतों, जिनका भगवान बुद्ध ने अपने उपदेशों में उल्लेख किया है कि, यह निरंतर विकास की ओर इंगित करता है।

शुभ आकृति: शुभ आकृति का चित्रण धार्मिक और भौतिक जीवन के परनिर्भरता का प्रतीक है। यह बौद्ध धर्म के अष्टांगिक मार्ग की ओर भी इंगित करता है।

कमल का फूल: बौद्ध धर्म में कमल के फूल का अत्यधिक महत्व है। यह शरीर, वचन और मन के शुद्धिकरण का प्रतीक है।

शुभ कलश: शुभ कलश दीर्घायु, सुख संपत्ति, आनंद, अनवरत वर्षा व जीवन के सभी सुखों व लाभों का प्रतीक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. बौद्ध धर्म का इतिहास और महत्वपूर्ण तथ्य : आचार्य विमल
2. बौद्ध धर्म से जुड़े 8 पवित्र चिन्ह : विनोद शुक्ल
3. भगवान् बुध का मानवता वादी चिंतन : कीर्ति विमल
4. बौध ग्रंथमाला : जैन भागचन्द्र
5. बुध और वेदांत : पाण्डेय आचार्य राम गोबिंद